<u>दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा–मद्रास</u>

मई –2009

समय : 10 बजे से 1 बजे तक

दिनांक : 11/05/2009

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

बी.ए. प्रथम वर्ष परीक्षा

विषय : हिंदी (अनिवार्य) प्रश्न पत्र:4

शीर्षक : रीतिकालीन काव्य

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

I. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखिए *:* ***3x10=30***

1. घनानंद का जीवन परिचय देते हुए बताइए कि घनानंद ने ***कारी कोकिला को क्रूर*** क्यों कहा है ?
2. बोधा का जीवन परिचय देते हुए ***काहूँ सो की कहिये*** पंक्ति का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए ।
3. अपने सवैया में घनानंद ने किन उपक्रमों से सौंदर्य लाने का प्रयास किया है ? पठित पाठ के आधार पर समझाइए ।
4. बिहारी का जीवन परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।
5. रहीम का जीवन परिचय देते हुए बताइए कि रहीम के अनुसार कौन सी चीजें ऐसी हैं जो दबाने से भी दबती नहीं ? अपने शब्दों में समझाइए ।

II . निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **पाँच** के उत्तर लगभग 250 शब्दों में लिखिए: ***4x5=20***

1. अपने मन की व्यथा को रहीम अपने मन में ही रखने को क्यों कहते हैं ? स्पष्ट कीजिए ।
2. भूषण का जीवन परिचय दीजिए ।
3. शिवाजी की चतुरंग सेना का वर्णन भूषण ने किस प्रकार किया है ? पठित पाठ के आधार पर बताइए ।
4. ***ताव दै दै मूछन, कंगूरन पै पांव दै दै,*** भूषण की निम्नलिखित पंक्तियों के संदर्भ में छंद की व्याख्या कीजिए ।
5. प्रेम का धागा टूट जाने पर क्या होता है ? रहीम के इस पद में व्यक्त विचारों को अपने शब्दों में लिखिए ।
6. ***नहिं पराग नहिं मधुर मधु*** –बिहारी के इस दोहे की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा इससे जुड़ी कथा भी लिखिए ।
7. ***गीधे गीधहिं तारि*** के दृष्टांत में बिहारी क्या कहना चाहते हैं ? समझाइए ।
8. ***एरे निरदई तोहि दया उपजायहाँ*** के द्वारा घनानंद ने किसे चुनौती दी है ?

III. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5x5=25

1. नरही पर माथे चढ़ैं हरि के फल जोग तैं एते न पावत हैं ।
तुम्हैं नीकी लगै न लगै तो भले हम जान अजान–जनावत हैं ।।

P.T.O

अथवा

काहू सों का कहियै अब है यह बात अनैसी कहे तैं कहावत ।
कोऊ कहा कहिहै सुनि है कही काहू की कौनौ हमैं नहीं भावत ।।

2. लाख लाख भाँतिन की दुसह दसानि जानि
साहस सहारि सिर आरे लाँ चलायहाँ ।
ऐसें घनअनांद गही है टेक मन माहिं
एरे निरदई तोहि दया उपजायहाँ ।।

अथवा

लकै अति सुंदर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै ।
हंसि बोलन मैं छबि-फूलन की बरषा, उर-ऊपर जाति है ह्वै ।।
लट लोल कपोल कलोल करै, कल कंठ बनी जलजावलि द्वै ।
अंग-अंग तरंग उठै दुति की, परि है मनौ रूप अबै धर च्वै।।

3. कौन भाँति रहि है बिरदु अब देखिबी, मुरारि ।
बीधे मोसाँ आनिकै, गीधे गीधा हिं तारि ।।

अथवा

कब कौ टेरतु दीन रट, होत न स्याम सहाइ ।
तुम हूँ लागी जगत-गुरू, जग-नाइक, जग बाइ ।।

4. तरुवर फल नहीं खात हैं, सरवर पिंयहिं न पान ।
कहि रहीम पर-काज-हित, संपति संचहि सुजान ।।

अथवा

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि ।।

5. छूटत कमान बान बंदूक रू कोक बान,
मुसकिल होत मुरचानहू की ओट -मैं ।
ताहि समै सिवराज हुकुम कै हल्ला कियौ,
दावा बांधि द्वेषिन पै बीरन लै जोर मैं ।।

अथवा

दारुन दइत हरनाकुस विदारिबे कौं
भयो नरसिंह रूप तेज बिकरार है ।
भूषन भनत त्यौं ही रावन के मारिबै कौ
रामचंद भयौ रघुकुल सरदार है ।

****